डॉ. देवीदास इंगळे जी की ग्रंथ संपदा

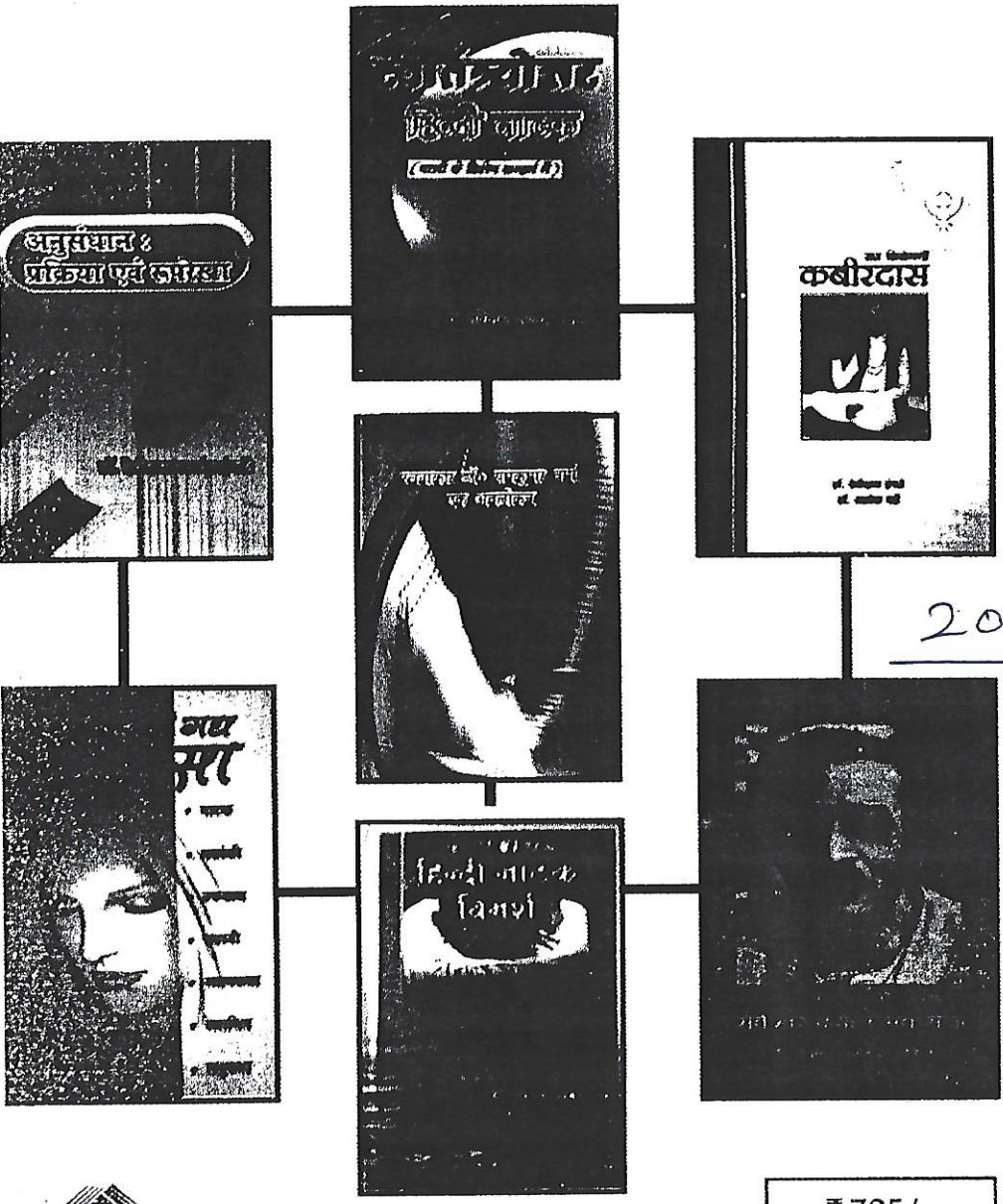

2021

₹ 795/-

ISBN : 978-93-91913-00-7

अमन

साहित्य साधना

(डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ)

सम्पादक
डॉ. अशोक मर्डे
डॉ. विनोदकुमार

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

साहित्य सा

डॉ. देवीदास इंगळे गौ

सम्पादक

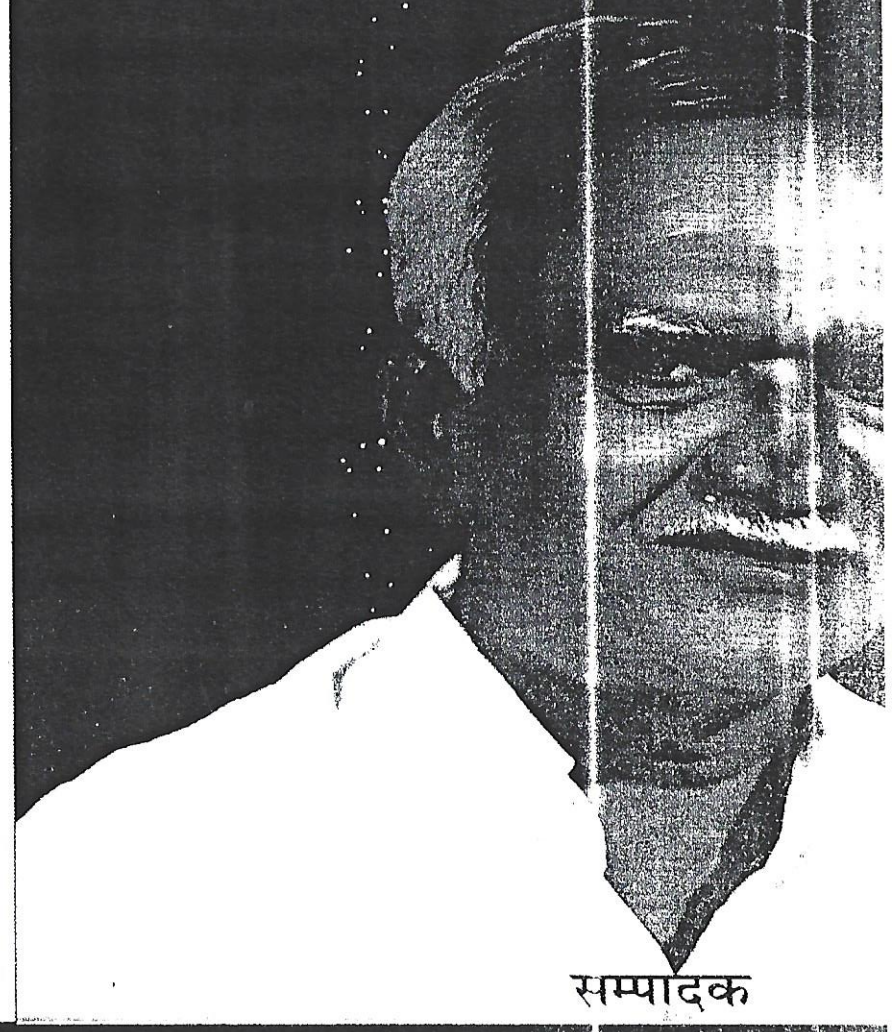

डॉ. अशोक मर्डे

डॉ. विनोदकुमार वा

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं । सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

पुस्तक	: साहित्य साधना (डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ)
सम्पादक	: डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे डॉ विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
आई.एस.बी.एन.	: 978-93-91913-00-7
संस्करण	: प्रथम, सन् 2021
©	: सम्पादक
मूल्य	: ₹ 795.00 मात्र
प्रकाशक	: अमन प्रकाशन 104-ए /80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.) मो. : 09839218516, 9044344050 फोन : 0512-3590496 (ऑफिस)
शब्द सज्जा	: अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर
मुद्रक	: आर.बी.ऑफसेट प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

SAHITYA SADHNA (Dr. Devidas Engley Gourav Granth)

Edited by : **Dr. Ashok Vasantraw Marde, Dr. Vinodkumar Vaychal**

Price : Rs. Seven Hundred Ninty Five Only

संपादकीय .....

आदरणीय गुरूवर्य तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष प्रो. डॉ. देवीदास इंगळे जी के अवकाश ग्रहण के उपलक्ष्य में साहित्य साधना यह गौरव ग्रंथ पाठकों को सुपुर्द करते हुए हम अतीव आनंद का अनुभव कर रहे हैं।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष प्रो. डॉ. देवीदास इंगळे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से आप सभी परिचित हैं। महाराष्ट्र की बड़ी शिक्षण संस्थाओं में स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था का नाम लिया जाता है और उसी शिक्षण संस्था के रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय उस्मानाबाद से वे 36 वर्षों की लम्बीसेवा के पश्चात् हिंदी विभाग प्रमुख इस पद से अवकाश ग्रहण कर रहे हैं। प्रो. डॉ. इंगळे जी हिंदी भाषा एवं साहित्य के गहन अध्येता एवं अध्यापक के रूप में सुप्रसिध्द हैं। शिवाजी विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्व प्रथम आने पर उन्हें डॉ. चंदुलाल दुबे सुवर्ण पदक प्राप्त हुआ था। उन्होंने 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक: पात्र प्रधानता की विशिष्ठता' इस विषय पर विद्यावाचस्पति की उपाधि अर्जित की है। किया है।

वे विगत 36 वर्षों से हिंदी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान एवं प्रचार-प्रसार के कार्य में पूर्ण निष्ठा के साथ जुटे हुए हैं। अपने कार्य काल में सर के 11 छात्रों ने विद्या वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की तथा 5 छात्रों ने विद्यानिष्णात की उपाधि प्राप्त की है। आपने अब तक 17 पुस्तकों का लेखन एवं संपादन का कार्य सफलता पूर्वक किया है। उसी प्रकार आप के अब तक सौ से भी अधिक शोधालेख प्रथितयश पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आज सैकडों छात्र-छात्राएँ अध्यापन तथा महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्यरत हैं। आपने बहिस्थ परीक्षक के रूपमें-मुम्बई, पुणे, कोल्हापुर, सोलापुर, नांदेड़, नाशिक एवं हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़ आदि विश्वविद्यालयों के लघु एवं बृहत शोध-प्रबंधों का मूल्यांकन किया है।

स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था के महाविद्यालय अनेक शहरों में होने के कारण आपका तबादला शुरूआती दिनों में होता रहा। जहाँ भी आपने नौकरी की, हर जगह आप सम्मान के हकदार बनें। पिछले अनेक वर्षों से आप मराठवाडा में ही कार्यरत रहे हैं। तुलजापुर हो या उस्मानाबाद के महाविद्यालयों में वे छात्रप्रिय प्राध्यापक रहे हैं। आपने अपने जीवन के अत्यधिक वर्ष उस्मानाबाद में बिताये हैं। उस्मानाबाद के रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय में कार्यरत रहते हिंदी अध्ययन मंडल के एक बार सदस्य तो दूसरी बार अध्यक्ष के रूप में चुनाव जीते। इसके पहले आप मुंबई

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

प्रभावी संप्रेषण के सिद्धांत

प्रा. डॉ. एम. बी. बिराजदार

मनुष्य समाजप्रिय प्राणि है और भाषा विचार–विनिमय का साधन है। भाषा और समाज का चोली–दामन का संबंध है। समाज के स्वस्थ्य संचालन, संतुलन तथा विकास के लिए समाज में स्थित सदस्यों का परस्पर संवाद बहुत जरुरी है, जिसके बिना समाज का अस्तित्व नही के बराबर है। संवाद मूलतः भाषा के माध्यम से ही स्थापित होता है। भाषा के माध्यम से ही एक व्यक्ति अपनी बात औरों तक संप्रेषित करने की चेष्टा करता है।

'संप्रेषण' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'कम्युनिकेशन' शब्द का हिंदी रुपांतरण है। जो कि लैटिन भाषा के 'कम्युनिज' शब्द से मानी गई हैं। कम्युनिज शब्द का अभिप्राय है, कॉमन या सामान्य। यह विचारों, संदेशों, सूचनाओं आदि का आदान–प्रदान करता है। विद्यामित्र के अनुसार, ''सामान्यतः सामान्य होने का अर्थ मानक होना है न कि, औसत संप्रेषण के अर्थान्वेषण प्रकल्प में मानक और औसत की द्विभाजकता रिचर्ड्स की मौलिक स्थापना है''।[1]

संप्रेषण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच मौखिक, लिखित, सांकेतिक, प्रतीकात्मक सूचना एवं प्रेषण की प्रकिया है। संप्रेषण का अर्थ है अपनी बात औरों तक पहुँचाना ताकि हम जो कुछ कहना चाहत है, वह औरों तक ज्यों का त्यों पहूँच जाए। जब तक समाज का एक सदस्य दूसरे सदस्य की बात को ठीक उसी आशय में न समझ सके। जो बोलनेवाली उस तक पहूँचना चाहता है, तब तक संवाद संभव नहीं है, अतः संवाद के लिए संप्रेषण अपरिहार्य है।

संप्रेषण की परिभाषा – अनेक विद्वानों ने इसे परिभाषा में बाँधने का प्रयास किया है। कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं।

लुईस ए. एफन – लुईस के अनुसार 'संप्रेषण अर्थों का एक पुल है। इसमें कहने, सुनने तथा समझने की व्यवस्थित तथा सतत प्रकिया रहती है।''

होलँड के अनुसार, ''संप्रेषण वह शक्ति है, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति विशेष संप्रेषण उद्दीपक को इस प्रकार प्रेषित करता है कि वह दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार को परिमार्जित कर सके।''

इस प्रकार संप्रेषण एक ऐसी प्रकिया है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति विशेष संप्रेषक किसी दूसरे व्यक्ति विशेष संप्रेषक के व्यवहार को सामान्यतः शाब्दिक प्रतीकों दवारा परिमार्जित करता है। डॉ. अंबादास देशमुख के शब्दों में ''समाज में संचार का वही स्थान है – जो शरीर के लिए भोजन का, मनुष्य का शारीरिक एव मानसिक विकास पूरी तरह से संचार प्रक्रिया से जुडा रहता है, यह मनुष्य के व्यक्तित्व को बनाता और निखरता है। ''[2]

प्रभावी संप्रेषण के सिद्धांत :–

तत्परता का सिद्धांत :– संप्रेषण प्राप्त कर्ता की संप्रेषण सामग्री में रुचि का होना आवश्यक है। संप्रेषण तभी प्रभाव बन सकता है, जब उसके प्राप्त करने के लिए संप्रेषण प्राप्तकर्ता पूरी तरह से तैयार हो। तत्परता से छात्रों में सीखने के प्रति उचित संकल्प, आत्मविश्वास तथा दृढ इच्छाशक्ति का विकास होता है। तत्परता छात्र में सीखने की प्रक्रिया के प्रति उचित सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में सहयोग करती है।

भाषा के उचित उपयोग का सिद्धांत – संप्रेषण में भाषा को प्रभावी पूर्ण बनाने के लिए निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है।

भाषा की स्पष्टता–

संप्रेषण प्राप्त कर्ता असानी से समझ सके।

विचारों की सुसंबद्धता–

संप्रेषित की जानेवाली सामग्री में भावों तथा विचारों की क्रमबद्धता तथा ताल–मेल होना चाहिए। विचारों मे एकता होने से संप्रेषण प्राप्तकर्ता उन्हें आसानी से समझ सकता है।

संक्षिप्तता:–

किसी भी विचार अथवा भावना को इधर–उधर घुमा–फिराकर अथवा बहुत लंबी–चौड़ी भूमिका बनाकर संप्रेषण करना उचित नहीं है। क्योंकि संप्रेषण प्राप्तकर्ता भूलभूलैया में पड सकता है। कहा जाता है, ''संक्षिप्तता अभिव्यक्ति की आत्मा होती है। विचारों को स्पष्ट भाषा में थोडे शब्दों में कहने से प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

संप्रेषण की आवश्यकता एवं महत्व :–

भाषा के क्षेत्र में संप्रेषण की आवश्यकता का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. कुसूम बांठिया के शब्दो में – वक्ता के कथन से लेकर श्रोता के समझने तक संप्रेषण की प्रक्रिया के कई चरण होते हैं। इस प्रक्रिया को समझने के लिए पहले यह याद रखना आवश्यक है कि, भाषा मूलतः ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। ये ध्वनि प्रतीक एक प्रकार का कोड होते है, जो किसी वस्तु, विचार, भाव, स्थिति या क्रिया के लिए प्रयुक्त होते है। हर भाषा के अपने ध्वनि प्रतीक या कोड व्यवस्था होती है। संप्रेषण की प्रक्रिया में वक्ता इस कोड के माध्यम से अपनी बात श्रोता तक पहूँचाता है। ''[3]

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tq. Tuljapur Dist. Osmanabad

इस प्रकार संप्रेषण वक्ता, श्रोता, संदेश आदि के उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक है। यह उसे विकास और उन्नति की ओर ले जाने में सक्षम है। प्रशासन की दृष्टि से उपयोगी संगठन को प्रभावशाली बनाने में महत्वूपर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। संप्रेषण की आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित रुप में देख सकते है।

1) विचारों के आदान–प्रदान में सुविधा :–

संप्रेषण के माध्यम से अधिकारी और कर्मचारी के बीच विचारों का, भावों का, सूचनाओं में आदान–प्रदान सुगमता से हो जाता है। निर्धारित समय और उपयुक्त व्यक्ति उपयुक्त सूचना मिलने से इसकी प्रभावशालिता में वृद्धि होती है और विकास को उन्नति के शिखर पर पहूँचाने का प्रयास सम्भव हो पाता है।

2) विरोधी विचारधाराओं की समाप्ति : –

संप्रेषण के द्वारा एक–दूसरे व्यक्ति के मन में बैठी विरोधी विचारधारा समाप्त हो जाती है। जो व्यक्ति एक दूसरे के प्रति मन में कटुता बनाए रखते है, संप्रेषण उस कटुता को दूर करता है। इस प्रकार विकास का एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण बनाता है। इसके संप्रेषण की उपयोगिता में वृद्धि होती है।

3) आपसी सहयोग–

संप्रेषण अधिकारी और कर्मचारी के मध्य फैली गलतफहमियों को दूर करता है। दोनों आपस में बातें करके अथवा सूचना के आदान–प्रदान से एक–दूसरे के साथ सहयोग करने को तत्पर हो जाते हैं।

4) समन्वय की स्थापना : –

विस्तार की दृष्टि से जो संस्थाएँ अत्याधिक बड़ी होती हैं, उनके अनेक विभाग होते हैं और ये सब विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित होते हैं। ऐसी स्थिति में संप्रेषण के माध्यम से समन्वय हो जाता है और पहले से अधिक कार्य को विस्तार देकर विकास की ओर अग्रेसर किया जाता है। समन्वय से विकास की गति बढ़ जाती है और इससे संप्रेषण की उपयोगिता स्पष्ट होती है।

5) समस्या का समाधान :–

संप्रेषण से विचार–विनिमय होता है। आपसी विचार–विमर्श से, उचित सुझाव से विविध समस्याओं एवं कठिनाइयों का समाधान खोज लिया जाता है। समस्या का समाधान खोजना किसी भी कार्य को शक्तिशाली बनाने में सहायता करता है। इस संप्रेषण की उपयोगिता में वृद्धि होती है।

6) अपनत्व की भावना का विकास –

संप्रेषण के द्वारा अधिकारी और कर्मचारी में आपस मे विश्वास बढता है और यह विश्वास ही कर्मचारी में कार्य के प्रति समर्पण की भावना पैदा करता है। परिणामस्वरुप संप्रेषण से अपनत्व की भावना का विकास होता है।

7) नेतृत्व क्षमता का विकास :–

संप्रेषण के माध्यम से नेतृत्व क्षमता विकसित होती है। एक–दूसरे के हितों का ज्ञान होने से संगठन बनता है। यह संगठन किसी एक व्यक्तिद्वारा संचलित होता है। यह व्यक्ति संप्रेषण के द्वारा अधिकांश को उनके हित को सामने रखते हुए अपने अनुयायी तैयार करता हैं। इस प्रकार नेतृत्व क्षमता का विकास होता हैं। डॉ. अंबादास देशमुख के शब्दों मे "मुरे" ने संप्रेषण के इस प्रक्रिया को मानव संबधों की धुरी बताया है।" [4]

इस प्रकार मानव के मौखिक संवाद ही नहीं, सोच–विचार का माध्यम भी भाषा ही होती है। गहन दार्शनिक विचारणा या चिंतन की बात छोड़ भी दें, तो छोटी–सी–छोटी बातों या सोच के लिए भी भाषा का सहारा लेना पडता है। जैसे बारिश की बौछार से बचने के लिए जब किसी मनुष्य का मस्तिष्क उसे किसी ओट की तलाश करने का निर्देश देता है, तो वह उसके अंतर में निहित भाषा के माध्यम से ही होता है, भले ही उसे सचेत रुप से इस बात का भान न हो । मुखर रुप से भाषा की अभिव्यक्ति के पहले आदि मानव जिन स्थितियों से गुजरता रहा होगा। उन्हें समझाने और उनके बारे में सोचने के लिए भाषा के किसी–न–किसी प्राचीन चिह्न रुप की अवस्थिति अर्थ के रुप में उसके मस्तिष्क मे रही होगी। उस अर्थ को वाणी देने के लिए ही 'वाक् प्रतीक' और इस प्रकार मुखर भाषा अस्तित्व में आई। डॉ. बांठिया कुसुम के शब्दो में – "अतः भाषा मात्र सामाजिक व्यवस्था नहीं, व्यक्तिगत आवश्यकता भी है। वह हमारे जीवन का अनिवार्य और अभिन्न अंग है।"[5]

अतः स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि, संप्रेषण विभिन्न दृष्टिकोणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कम से कम समय में अधिक कार्य कराने में सक्षम बनाता है। संपूर्ण कार्य विधि को अच्छी व्यवस्था देता है, सब में मिलजुलकर कार्य करने के लिए प्रेरित करता है और स्वयं के हित के साथ औरों के हित को भी आगे बढाने में सहायता करता है। अतः संप्रेषण अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रभावी और विशेष उपयोगी है।

संदर्भ : –

1) विद्या मित्र– ज्ञान कौशल्य, 16 दिसंबर 2015
2) डॉ. देशमुख अंबादास – प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम, पृ. 868
3) डॉ. बांठिया कुसुम – 'भाषा और भाषा संप्रेषण
4) डॉ. देशमुख अंबादास – प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम, पृ. 369
5) डॉ. बांठिया कुसुम 'भाषा और भाषा संप्रेषण'

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce Colleg
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad